थिरकते शैल-चित्र

-419

रॉकी

आदरणीय शर्मा जी को
सादर
22.5.93

थिरकते शैल-चित्र

मिर्जापुर के शैलाश्रयों में चित्रित नृत्य-दृश्य

राकेश तिवारी
क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी
उ० प्र० राज्य पुरातत्व संगठन, लखनऊ

युवा परिभ्रमण एवं सांस्कृतिक-समिति, उ० प्र०, लखनऊ

प्रथम संस्करण : १९८२

कला-पक्ष

अजय कान्त टंडन

5419

State Museum Library • Lucknow •

मूल्य :

रु० १५.०० मात्र

© रॉकी, राकेश तिवारी

चित्र-मुद्रक :

प्रिन्ट एण्ड प्रेस, हिन्दी विश्वभारती
पान दरीबा, लखनऊ

मुद्रक :

शान्ती प्रेस, नया गांव, पश्चिम
लखनऊ

मुख पृष्ठ : कउआ खोह का सजीला नर्तक

प्रकाशक/वितरक

युवा परिभ्रमण एवं सांस्कृतिक समिति
५, बलरामपुर छात्रावास, कैसरबाग
लखनऊ (उ० प्र०)

लेखकीय

अक्सर सैलानी उड़ानों के दौरान मिर्जापुर के मनोरम दक्षिणांचलीय वनों में पहुँच जाता। दिन भर भटक कर प्रायः किसी प्रपात के निकट चट्टानी छाया में डेरा डालता, कभी-कभी उनकी भीतरी खुरदुरी सतह पर सूखे रक्त जैसे रंग के अस्पष्ट चित्र दिखते। कौतूहलवश उन पर पानी लगाते ही आकृतियाँ चटक पड़ने लगतीं और उनमें आखेट-दृश्य, नर्तक-समूह या पशु-पक्षी-आकार उभर आते। प्रारम्भिक कौतूहल बाद में शौक, फिर, खोज का विषय और अन्त में मिर्जापुर के चित्रित शैलाश्रयों पर पुस्तक लिखने की इच्छा में परिवर्तित हो गया।

•

परम आदरणीय बाबू जी, पद्म भूषण प० अमृत लाल नागर जी, ने मुंह खोल कर अपने इस बंदर से कुछ मांगा तो आवाक रह गया –

"बेटा ! एक कृपा करो मुझ पर।– – – – –"

मन ही मन घबराया।

"पता नहीं क्या मागेंगे ? पूरा भी कर सकूंगा ?"

"भीख मांगता हूं बेटा ! मिर्जापुर के चित्रित– शैलाश्रयों पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर दो।– – – – –"

दो कौड़ी मांग कर स्वर्ण-कोष थमा दिया। उनकी मांग ने भी कितनी दुर्लभ सम्पदा दी ? प्रेरणा से समृद्ध इच्छा आकार लेने लगी। कुछ शैलाश्रय पहले से ज्ञात थे, कुछ मित्रों की मदद से तलाशे और लगभग २०० शैलाश्रयों के चित्रों की प्रतियां तैयार कीं। उनके बहुपक्षीय अध्ययन के क्रम में पहला लेख संग्रहालय पुरातत्व पत्रिका के पुरातत्व-अंक में प्रकाशन हेतु भेजा, दूसरा '**थिरकते शैल-चित्र**' के रूप में प्रस्तुत है और अन्य पक्षों पर किया जा रहा अध्ययन प्रगति पर है

इस संदर्भ में सभी विद्वतजनों से विनम्र अनुरोध है कि त्रुटियों और आवश्यक तथ्यों की ओर इंगित करते हुए संभव सुझाव भी देने की कृपा करें जिससे अगले प्रत्यनों में अधिक उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की जा सके, इसके लिये मैं हृदय से आभारी होऊँगा।

राँकी

२२-२-८२, लखनऊ।

आभार

श्रम-साध्य सर्वेक्षण-कार्यों में सहायता हेतु श्री अभय कृष्ण अग्रवाल, श्री सत्य-नारायण पांडे श्रीं सुभाष राय (वाराणसी), श्री रमा कान्त दूबे (बदायूं) श्री ग्रीष्म कुमार सिन्हा (फैजाबाद), श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (लखनऊ); लिखने के लिए प्रेरित करने हेतु परम आदरणीय पद्म भूषण प० अमृत लाल नागर, श्री ज्ञान चन्द्र जैन, डा० शरद नागर, श्री राम मणि पांडे, श्री सूरज प्रताप सिंह, (लखनऊ), श्री देवी शंकर बाजपेई, श्री रणवीर सिंह, श्री देवेन्द्र नारायण सिंह (राय बरेली); संदर्भ ग्रन्थ उपलब्ध कराने और विचार-विमर्श हेतु डा० पूर्णचन्द्र पन्त, रीडर, प्रागैतिहास, प्रा० भा० इ० सं० एवं पु० विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय; श्री गिरीश चन्द्र सिंह, श्री अमर सिंह, श्री हेमराज, श्री नकवी (लखनऊ); श्री अतुल कुमार सकलानी और श्री बुद्धि प्रकाश बडोनी (श्रीनगर, गढ़वाल); चित्रों की प्रतियां, साज-सज्जा और मान-चित्र तैयार करने के लिये श्री अजय कान्त टण्डन, श्री राम गोपाल मिश्र और श्री बलरामकृष्ण श्रीवास्तव (लखनऊ); समय-समय पर यात्राओं के संदर्भ में वांक्षित अवकाश आदि सुविधाएं प्रदान करने के लिये श्री रामचन्द्र सिंह, निदेशक, उ० प्र० राज्य पुरातत्व संगठन; मिर्जापुर के शैल-चित्रों पर शोध-कार्य करने की अनुमति प्रदान करने हेतु श्री भवानी शंकर शुक्ल, निदेशक, सांस्कृतिक कार्य विभाग, समस्त प्रयत्नों को इस रूप में प्रस्तुत करने के सर्व महत्व पूर्ण सहयोग हेतु परम मित्र श्री श्याम सुन्दर शर्मा; तथा चित्रों की सुन्दर छपायी और अन्य सहायताओं के लिये क्रमशः श्री हृदेश्वरनाथ भार्गव व कामरेड अशोक कुमार का हृदय से आभारी हूँ।

राँकी

थिरकते शैल-चित्र

नृत्य मूलतः अन्तर्मन के आनन्द से उदभूत हुआ। श्यामल मेघों का घिराव देख मयूर आनन्द से थिरकने लगते हैं, हरियाले वन प्रांतर में उल्लसित मृग-छौना किल्लोलें करता है, मृगया से छके सिंह-शावक मस्त कलाबाजियाँ लगाते हैं, कुछ विशिष्ट अवसरों पर चिड़ियाँ चहक-चहक कर फुदकती हैं और निश्चित रूप से किन्हीं अवसरों पर अन्तर्मन में उठे आनन्द के ज्वार ने ही प्रथमतः आदिम मानव के अंग-अंग में चपलता भर कर उन्हें बांहें व पैर लहरा कर, गरदन और सिर लचका कर नाचने के लिए उद्यत किया होगा। फिर तो कदम-कदम पर उनके जीवन से नृत्य जुड़ता गया। आखेट खेलने चले तो सफल मृगया की कामना में नाचे, कबीले भर की भूख मिटाने लायक बड़ा पशु गिरा लिया तो सफलता की उमंग में नाचे, लौट कर आये, अहेर अलाव पर भुनने लगा और अहेरियों की टोलियां सुस्वादु मांस की लालसा में कमर, कन्धे या हाथों में हाथ डाल कर थिरकनें लगीं। कालान्तर में वर्षा, पवन, वन, घाट, नदी, पेड़ या सूर्य जो भी उन्हें पारलौकिक लगता, जिससे उनका हित सधता या जिससे भय खाते उन सब की उपासना में, जल, वायु और फल-फूल, कुशलतापूर्वक घाट उतरने, आखेट व ताप की आकाँक्षा में भी नाचने लगे।

जब तक नृत्य मात्र आनन्द से जुड़ा रहा नर्तक नाम का कोई कलालार नहीं होता था, अवसर आने पर सभी उमंग में भर कर नर्तक बन जाते लेकिन कालान्तर में अनेकानेक कारणों से इस सर्व-सामान्य आनन्दाभिव्यक्ति ने कला का रूप लेना प्रारम्भ किया जिसके परिणामस्वरुप एक बड़े मानव समाज में नर्तकों का अलग वर्ग बन गया। कलाकार साधना के बल पर नृत्य का अभिनय करने लगा। धीरे-धीरे आदिम-नृत्य को तराश कर शास्त्रीय-नृत्य का रूप प्रदान किया गया किन्तु उस के अनुशासन, उसके लिए की जाने वाली साधना और दुरुहता के कारण सामान्यजन उनसे कटते गये, अतः सामान्य लोगों में नृत्य का सहज स्वरुप उभरा जिसने लोक-नृत्यों की विभिन्न शैलियों को जन्म दिया। क्रमशः समय के साथ बढ़ती जा रही जीवन की जटिलताओं में सहज आनन्द के स्रोत सूखते जाने के कारण लोक में भी नृत्य की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से कम होती गयी और नृत्य अब आनन्द का परिचायक तो कम कला अधिक बन गया है।

यद्यपि गहन कान्तरों में जहां-तहां अब भी पूरे-पूरे गांव और अन्दरूनी इलाकों के थोड़े से ग्रामीण कुछ अवसरों पर सम्मिलित रूप से मस्ती के स्वाभाविक ज्वार में उफनने लगते हैं और नयी पीढ़ी के किशोर व नवयुवक ब्याह-शादी और त्योहारों पर परम्परा से हट कर जैसे चाहे की तरंग में मौज मना लेते हैं, फिर भी, निकट भविष्य में पुनः नृत्य को उसका सहज स्वरूप मिल सकना संभव नहीं लगता। भौतिक सुविधाओं की दौड़ में हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जा रहे हैं जीवन की मधुर गमक त्यों-त्यों रीतती जा रही है लेकिन समय की कमी के बावजूद भी हम जीवन में नृत्य-संगीत की मधुरता की भरपूर आवश्यकता महसूस करते हैं, काश ! आधुनिक संस्कृति में आदिम-नृत्यों का उल्लास भी घुल सका होता।

यों तो आदमी सहस्रों वर्षों से आनन्द व उल्लास-वश नाचता-गाता-झूमता रहा है लेकिन बहुत लम्बी प्रारम्भिक नृत्य-परम्परा को देखने-जानने का कोई साधन अब तक हमारे पास नहीं जुट सका है, वह तो 'जंगल में मोर नाचा किसने देखा' की तरह है। कालान्तर में आदिम मानवों ने कहीं आज से लगभग ३०,००० वर्ष, कहीं २०,०००, कहीं ८,००० वर्ष और कहीं उससे भी बाद में अभिव्यक्ति के सहज भाव से देवी-देवताओं की उपासना हेतु अथवा अन्य किन्हीं कारणों से, उपलब्ध साधनों द्वारा, वनों, पर्वतों में स्थित खोह, कन्दराओं या शैलाश्रयों की पाषाणी सतहों पर चित्र बनाने प्रारम्भ किये। धीरे-धीरे ये स्थल चित्रों से भर गये और अब दुर्लभ कलावीथिकाओं के रूप में तत्कालीन जीवन के तौर-तरीकों को समझने के अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इनमें आदिम-नृत्य व संगीत-परम्परा का भी चित्रण मिलता है जिनके माध्यम से उनके अध्ययन की अच्छी संभावनाएं हैं। ऐसे चित्रों से युक्त खोह, कन्दराए व शैलाश्रय अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, मध्य एशिया, सोवियत यूनियन और आस्ट्रेलिया (एलिमेन-१९५७ : ३५३-९८; लोम्मेल-१९६६; गूरां–१९७२, १३-३२; गुप्त–१९६७ : १८-२६; गुप्त, एस० पी० १९७९: १००-२; बर्किट-१९६३ : १६७-२२८) की तरह भारत में भी मध्य प्रदेश के भीम बेटका, पंचमढ़ी, रायगढ़, सीधी, रीवा, पन्ना, भोपाल, रायसेन, सागर, कटनी, नरसिंहपुर, बस्तर, ग्वालियर व चम्बल क्षेत्र, बिहार, के शाहाबाद व पलामू जिलों में, उड़ीसा, आन्ध्र, रायपुर, दक्षिण और उत्तर प्रदेश में वाराणसी, इलाहाबाद, बांदा और मिर्जापुर से प्रकाश में आ चुके हैं (काकबर्न १८८३–१८८४–९८८९; गुप्त-वही, ५९-८७; मिश्र, वी० डी०–१९७७ : ५४-५६; मठपाल–१९८१ : १–२६)।

प्रस्तुत लेख में मिर्जापुर जिले के शैलाश्रयों में चित्रित नृत्य-दृश्यों पर विचार किया जा रहा है। यह जिला इलाहाबाद नगर से दक्षिण-पूर्व और वाराणसी से दक्षिण स्थित है। इसके दक्षिणांचल में पश्चिम से पूर्व, सीमा के आर-पार, प्रवाहित शोणभद्र-नद के उत्तर कैमूर की कगारों, उसके ऊपर उत्तर में गंगा के मैदान और पूरब में बिहार के रोहतास जिले की सीमाओं तक विस्तृत पठारी भू-भाग में बलुआ पत्थर के सहस्रों छोटे-बड़े आश्रय मिलते हैं। अब तक इनमें से लगभग २०० चित्रित शैलाश्रय प्रकाश में आ चुके हैं (गुप्त, वही; मिश्र-वही; राँकी, तिवारी–१९८० अ: ९–१०, ब : ३, १९८१ अनुक्रमणिका, चित्रित शैलाश्रय)। अधिकांश शैलाश्रयों के निकटवर्ती क्षेत्र में और कुछ के भीतर, यथा कउआ खोह, गोछरा व हथबनवा में लघु-पाषाण-उपकरण बड़ी संख्या में बिखरे मिलते हैं। विन्ध्य क्षेत्र की परम्परा के अनुरूप यहां भी समतल पठार और छिछली वनाच्छादित घाटियां हैं जिनमें अनेक छोटी-बड़ी धाराएं यथा सिद्धनाथ की दरी, जोगिया दर, पनसीले दरी, मुक्खा दरी आदि सुन्दर प्रपात बनाती हैं, अधिकांश चित्रित-शैलाश्रय इनके निकटवर्ती क्षेत्र में पाये गये हैं।

मिर्जापुर के इस अंचल में हैमेटाइट, चूना, कोयला, अल्युमिनियम और सीमेन्ट जैसी भू-सम्पदाएं सहज उपलब्ध हैं। यद्यपि औद्योगिक विकास के कारण अधिकांश वन कटते जा रहे हैं, फिर भी, ५० प्रतिशत चित्रित-शैलाश्रयों के प्राप्ति-स्थल अब भी बहुधा वन्य क्षेत्रों में स्थित हैं। इन वनों में तेंदुए, सुअर, भालू, हरिण, बारहसिंहा, सांभर, नीलगाय, भेड़िया, सियार, लंगूर, तीतर-बटेर, वन-मुर्गी, गोह, अजगर और सर्प जैसे पशु-पक्षी व सरीसृप तथा यदाकदा बाघ भी मिलते हैं। पलास, आंवला, पियार (चिरौंजी) महुआ, आम, जामुन, मिलकर (बेल) आदि वृक्षों, बैर, बांस, अइलाइन, चकवड़ व अन्यान्य वनस्पतियों से भरे इन वनों में कोल, बैगा, चैरों, गोंड, पनिका, धांगर, धरकार, बंसवार और खरवार जैसी जनजातियों के निवास हैं। इनका जीवन आखेट, सीमित खेती, जंगल की लकड़ी व फल-फूल तथा सीमित मजदूरी पर आधारित है। अब वन-मार्गों से जीप द्वारा प्रायः सभी जगह पहुंचना सहज हो गया है। इस क्षेत्र में स्थित राजगढ़, मड़िहान, घोरावल, राबर्टसगंज, चुर्क, पन्नूगंज, अहरौरा और चुनार तक बस द्वारा तथा मिर्जापुर, चुनार, सक्तेशगढ़, राजगढ़, राबर्टसगंज और चुर्क तक ट्रेन द्वारा पहुंचा जा सकता है।

नृत्य-दृश्यों की दृष्टि से मिर्जापुर के चित्रित शैलाश्रयों में **कण्डाकोट, सोरहोघाट,**

लिखनिया, राजपुर, घोड़-मंगरा, हरना-हरनी, सहबइया, मूड़ा-लिखनिया,[1] **मुक्खादरी और ढोकवा-महरानी** के शैलाश्रय सुज्ञात हैं (गुप्त-वही : पृ०—५९-६९; मिश्र-वही; मठपाल-वही) **कउआखोह, हथबनवा, गोहमनवा, मगरदहा, तुरियानी, मतहवा, सूगापांख, झरियानाला, कुप्पिहवा, कइरी, दुअरा, निम्बहिया-मयरा, धनबैरा, दंतहा-पहाड़**[2] (रॉकी-वही) और **ललमनिया** (इ०आ०रि०—१९७७-७८) नये नाम हैं।

कउआखोह और हथबनवा विजयगढ़ दुर्ग से लगभग १५ किमी० दक्षिण-पश्चिम स्थित बघनार गांव के निकट, गोहमनवा, मगरदहा, तुरियानी और मतहवा विजयगढ़ दुर्ग के दक्षिण-पूर्व लगभग १२ किमी० क्षेत्र में सूगापांख, झरिया-नाला व कुप्पिहवा, कण्डाकोट और लिखनिया के मध्य, कइरी पहाड़, राजपुर के दक्षिण और दुअरा राजपुर से रीजुल गांव के मार्ग में पड़ता है। दतहा-पहाड़ जरगो-बांध के निकट स्थित बनी-मिलिया गांव के पास, ललमनिया (शेरवां) अहरौरा के निकट और निम्बहिया-मयरा रीवां मार्ग पर जिले के अन्तिम गांव भैंसोर के दक्षिण स्थित हैं।

नृत्य-दृश्यों के अध्ययन के लिए पहले प्रत्येक दृश्य को पानी लगा कर साफ किया गया, फिर उन पर ट्रेसिंग-पेपर रखकर अत्यन्त सावधानी से मूल आकार में उनकी प्रतिलिपियां उतारी गयीं। स्थल पर ही चित्रों की स्थिति पर आवश्यक टिप्पणियां ली गयीं और आवश्यकतानुसार छायाचित्र भी लिये गये। इस तरह मिर्जापुर के शैलाश्रयों में चित्रित ६० नृत्य-दृश्यों में कुल ३९७ नर्तकों के चित्र प्राप्त हुए। शैलाश्रयों की छतों और दीवारों पर अंकित अधिकांश चित्र अत्यधिक धुंधले हो गये हैं। कुछ चित्रों पर 'पैटीनेशन' की मोटी पर्तें चढ़ गयी हैं। वर्षा व ताप आदि प्राकृतिक कारणों से चट्टानों के चप्पड़ छूटते रहने के कारण कुछ चित्र पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं और अवशिष्ट दृश्यों में मात्र कहीं हाथ, पैर या सिर के अंश ही दिखते हैं। कुछ दृश्य इतने अस्पष्ट हैं कि उनका रेखांकन संभव नहीं हो सका। एक ही दृश्य के कुछ चित्र खुले में रहने के कारण धुंधले पड़ गये हैं और कुछ चित्र चटक हैं।

नृत्य की **शैलियों के अनुसार दृश्यों के विभिन्न वर्ग** बनाये जा सकते हैं। प्रथम वर्ग विभिन्न मुद्राओं में बिना हाथ में हाथ थामे नृत्यरत नर्तकों, द्वितीय वर्ग हाथ में

1, 2—इन शैलाश्रयों की जानकारी के लिए लेखक डा० पूर्ण चन्द्र पन्त, रीडर, प्रागैतिहास, प्रा० भा० इ० सं० एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आभारी है।

मिर्जापुर

पैमाना :-1सेमी =10किमी

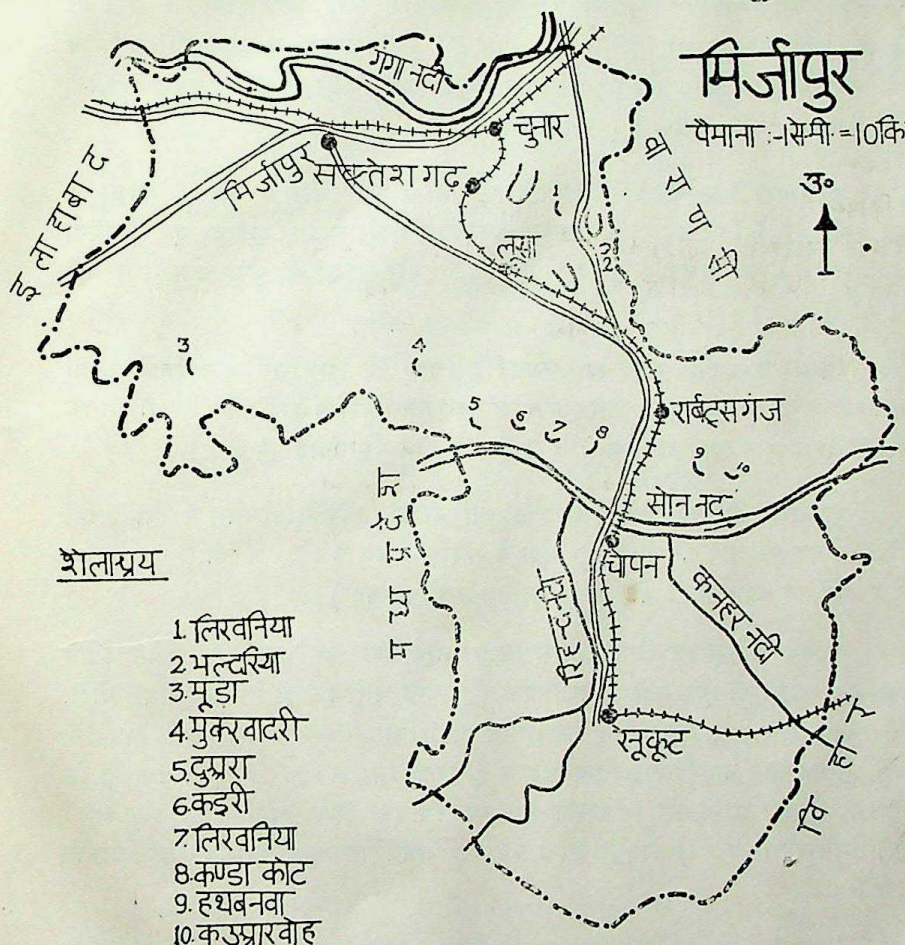

शैलाश्रय

1. लिरवनिया
2. भल्दरिया
3. मूड़ा
4. मुकरवादरी
5. दुग्रारा
6. कइरी
7. लिरवनिया
8. कण्डा कोट
9. हथबनवा
10. कउग्रारवोह

हाथ थामकर नृत्य करते नर्तकों, तृतीय वर्ग घेरा बनाकर नाचते नर्तकों, चतुर्थ वर्ग अनिश्चित क्रम वाले और पंचम व षष्ठम वर्ग क्रमशः एकाकी व दो-दो नर्तकों से सम्बद्ध हैं।

सबसे अधिक २६ दृश्य एक कतार में **बिना हाथ थामे विभिन्न मुद्राओं में नृत्यरत नर्तकों** के हैं। ऐसे दृश्य कइरी, केरवाघाट, घोड़मंगरा, झरिया, ढोकवा-महारानी, तुरियानी, मतहवा, मगरदहा, मुक्खा दरी, राजा का बैठका, हथबनवा और हरना-हरनी के शैलाश्रयों में चित्रित हैं।

मुक्खादरी से प्रकाश में आये सूखे खून जैसे रंग से चित्रित नृत्य-दृश्यों मे विशिष्ट प्रकार के नर्तक चित्रित हैं। इन्हें एक चौड़ी आयताकार आकृति के भीतर आड़ी-तिरछी त्रिकोणात्मक और परस्पर काटती रेखाओं द्वारा भर कर, ऊपर कोनों से उठी हुई बाहें और नीचे पैर बनाकर चित्रित किया गया है। ऐसी प्रत्येक दो आकृतियों के मध्य दोनों हाथों में सामने की ओर धनुष उठाये बायीं ओर बढ़ते नर्तक प्रदर्शित हैं। दोनों दृश्यों में क्रमशः ९,१७ नर्तक हैं (चित्र संख्या २, ३)।

मुक्खादरी के उपरोक्त शैलाश्रयों में ही बायीं व दायीं ओर ८ और ५ नर्तकों के समूह चित्रित हैं (चित्र वही)। ये नर्तक दोनों हाथ कन्धों से ऊपर उठाकर एक ही दिशा में नृत्यमुद्रा में बढ़ते दिखलाये गये हैं। ऐसे ही ६ और नर्तकों के समूह मतहवा से भी पाये गये हैं।

लिखनिया अथवा राजा का बैठका शैलाश्रय की छत पर आयताकार लम्बी आकृतियों में ऊपर एक रेखा खींच कर धड़ व सिर के भाग दर्शाये गये हैं और उसके बगल में बायीं ओर ऊपर दो रेखाओं से बाहें और नीचे पैर बनाये गये हैं।

मुक्खादरी के उपरोक्त शैलाश्रय में हाथियों के ऊपर नृत्योल्लास में दोनों बाहें आगे सिर तक लहरा कर, बैठने की मुद्रा में विशिष्ट लय के साथ पैर मोड़ कर नाचते हुए ४ गतिवान नर्तक बायीं ओर बढ़ते चित्रित हैं (चित्र-वही)।

मतहवा में मोटी-मोटी रेखाओं से चित्रित हाथ उठा कर दायीं ओर कदम बढ़ाते तीन स्थूल नर्तकों की नृत्य-गति ध्यानाकर्षक है। इसी शैलाश्रय में चित्रित सीधी, मोटी, खड़ी रेखाएं खींच कर, ऊपर-नीचे उतनी ही मोटी शाखों की तरह निकले हाथ-पैरों वाली मानवाकार आकृतियां अत्यन्त रोचक हैं (रेखा चि० सं० ८)। बहुत संभव है कि इन्हें किन्हीं और भावों की अभिव्यक्ति के लिये चित्रित किया गया हो किन्तु इनकी गति, चित्रिणशैली और आकृतियों द्वारा बन रहे अधघेरे से नृत्य के भावों का आभास होता है।

मतहवा के ही एक अन्य शैलाश्रय में क्रमशः ८ और ३ नर्तकों के दो समूह चित्रित

हैं। इनकी महीन किनारी गाढ़े काले रंग से बना कर भीतर सूखे खून जैसा रंग भरने से ये चित्र बड़े सुन्दर बन पड़े हैं। पहले दृश्य में आठों नर्तक बायां हाथ कन्धे से ऊपर उठाए, दायां पीछे लहराते हुए गरदन लचाकर नाचते प्रदर्शित हैं (रेखा चि० सं० ६)। चारनर्तकों की कमर से खाल जैसी कोई चीज लटकती दिखती है। दूसरे समूह के नर्तकों को थोड़ा झुक कर दोनों बाहें और पैर विपरीत दिशाओं में नीचे झुलाकर नाचते हुए चित्रित किया गया है।

राजा का बैठका में चार नर्तकों को बायीं ओर बढ़ते एक आगे और एक हाथ पीछे उछाल कर, ढोकवा-महारानी में दो को सामने की ओर उठे हाथों में कोई उपकरण लिये हुए, केरवाघाट में तीन नर्तकों को हाथ उठाकर बायी ओर और मगरदहा में १० को हथियार व दो को खाली हाथ दायीं ओर बढ़ते चित्रित किया गया है।

मगरदहा के एक अन्य दृश्य में चार नर्तकों को बायीं ओर और एक को दायीं ओर हाथ उठाये, दो को कटिहस्त मुद्रा में और उसके दायें एक अन्य नर्तक को हाथों में एक लम्बा वाद्ययन्त्र लिये, गेरुए रग से चित्रित किया गया है। दो अन्य नर्तक कोई अस्पष्ट उपकरण लिये हुए हैं। वाद्ययन्त्र वाले नर्तक की मुद्रा से लगता है मानो वह नाचते-नाचते विपरीत दिशा में घूम पड़ा हो।

हथिया कै लेखानी अथवा दंतहा-पहाड़ के नृत्य-दृश्य में पांच छोटे नर्तक दोनों हाथ कमर पर रखे और उनके अगल-बगल दो बड़े नर्तक प्रदर्शित हैं। सबसे बायें ताम्रनिधियों में पायी जाने वाली मानवाकार आकृति जैसा एक नर्तक भी चित्रित हैं। सभी नर्तक गेरुए रंग से बनाये गये हैं।

तुरियानी के एक शैलाश्रय में पांच नर्तकों को एक हाथ ऊपर और एक नीचे लहरा कर नाचते हुए दिखलाया गया है। इनमें से तीन नर्तक फुल्लियों वाली शिरोभूषा से सज्जित हैं।

हथवनवा के विशाल शैलाश्रय में भूमि से लगभग ४ मीटर की ऊंचाई पर सफेद किनारी के मध्य सूखे खून जैसा रंग भर कर बनाये गये डण्डधारी ऊर्द्धवलिंगी मस्त नर्तकों का चित्रण विशेष महत्वपूर्ण है। सभी नर्तक बायीं ओर मुँह किये पैरों से सिर तक गर्दन, धड़, हाथ, कमर और कूल्हों तक अनोखे लहराव और मस्ती से भरे जान पड़ते हैं। लगभग २५ से. मी. ऊंचे और १५ से. मी. चौड़े इन ४ नर्तकों के अतिरिक्त यहाँ और नर्तकों के चित्रण के साक्ष्य भी स्पष्ट हैं जिनमें से किसी के पैर और किसी के उठे हुए हाथ दिखते हैं (चित्र संख्या–१०)।

घोड़मंगरा के ऊपरी शैलाश्रय में नारंगी अथवा गेरुए रंग की किनारी और सूखे खून जैसे रंग से चित्रित चार नर्तकों का समूह आकार की दृष्टि से अनोखा है। इन्हें

देख कर ऐसा लगता है मानो मछली के धड़ वाले मेंढक दोनों हाथ उठा कर खड़े हो गये हों (रेखा चि० सं०–११)। इसके अतिरिक्त यहाँ ६ नर्तकों का एक अन्य समूह भी चित्रित है। इसमें दाहिनी ओर दोनों हाथ उठा कर बैठने की मुद्रा में नृत्यरत एक नर्तक को सिर पर पीले रंग की दो पट्टियों, पीठ पर सात लहरों वाली पीली किनारी, मध्य में सूखे खून जैसे रंग के बीच हल्के गेरुए या लाल रंग के भराव और सिरे पर खुली वेंणी द्वारा सजा कर अत्यन्त आकर्षक बना दिया गया है। एक हरिण के नीचे सम्भवतः लबादे जैसा वस्त्र धारण किये दोनों हाथ उठाये दो भारी और एक सामान्य नर्तक का काले रंग से किया गया चित्रण सुन्दर बन पड़ा है।

राजपुर के दक्षिण-पश्चिम स्थित कइरी पहाड़ के शैलाश्रय में सामने की ओर ऊपर उठे दोनों हाथों में धनुष ले कर नृत्योल्लास में बांह, धड़, गरदन व पैर एक ही लय में लहरा कर नाचते दो स्त्री व दो पुरुष नर्तक नृत्य की प्रभावशाली मुद्रा में चित्रित किये गये है।

झरिया नाला शैलाश्रय के तीनों नृत्य-दृश्य अपनी शैली, रंग व विषय के अनुसार ऐतिहासिक काल मे चित्रित जान पड़ते हैं। इनमें स्त्री-पुरुषों व एक बच्चे को दोनों हाथ ऊपर उठाकर या दोनों हाथ जोड़ कर सामने उठाते हुए निरूपित किया गया है। एक दृश्य में एक स्त्री व एक पुरुष के दो जोड़ों में से एक को बैठ कर और दूसरे को खड़े हो कर नाचते दिखलाया गया है। एक नर्तक व नर्तकी के हाथ में अस्पष्ट वस्तु और एक स्त्री के कानों में कुण्डल प्रदर्शित हैं।

भल्दरिया नाला (निकट अहरौरा), चनाइनमान (निकट रावर्टगंज), सीता-कुण्ड (निकट पनौरा), राजा का बैठका आदि से एक कतार से बढ़ते शस्त्रधारी अथवा शस्त्रहीन मानवों के चित्रण बड़ी संख्या में मिले हैं जिन्हें कुछ विद्वानों ने नृत्य-दृश्यों के रूप में पहिचाना है। नमूने के तौर पर डा० जगदीश गुप्त द्वारा नृत्य-दृश्य के रूप में उल्लिखित लिखनिया (राजा के बैठका) के पांच नर्तकों के समूह को यहां भी सम्मिलित किया गया है (गुप्त—वही, नृ० वा फ०॥)। बहुत सम्भव हैं कि ये आखेट के पूर्व या बाद के सशस्त्र-नृत्यों का प्रतिनिधित्व करते हों किन्तु पर्याप्त प्रमाणों और नृत्य-मुद्राओं व भावों के अभाव में इन्हें नृत्य-दृश्य मानना सन्देहपूर्ण जान पड़ता है इसलिए उपरोक्त दृश्य यहां सम्मिलित नहीं किये जा रहे हैं।

हाथ में हाथ थाम कर नृत्य मुद्रा में चित्रित समूहों में से गोल सिर वाले नर्तकों के चित्रण की शैली सर्वाधिक प्रचलित रही है। ऐसे दृश्य सहबइया, राजा का बैठका, कण्डाकोट, मूड़ा, तुरियानी और हथबनवा से पाये गये हैं। संख्या की दृष्टि से सहबइमा के समूह में सर्वाधिक १५ नर्तक चित्रित हैं। मूड़ा और तुरियानी के कुछ नर्तकों की श्रेणियां भी प्रदर्शित हैं। प्रायः सभी जगह इनके चित्रण के लिए गेरुए रंग का उपयोग

किया गया है। चित्रण की यह विधा भारत के भीम बेटका, चम्बल, पचमढ़ी (म०प्र०) और लखू उडियार (अल्मोड़ा, उ० प्र०) आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त अफ्रीका में भी प्रचलित रही है (अग्रवाल व जोशी; १९७८:७६; गुप्त–वही; मठपाल–१९७६:३०)। कभी-कभी इनमें चित्रित नर्तकों की संख्या १५ से भी अधिक पायी गयी है यथा बिहार के पलामू जिले में भवनाथपुर से लगभग ८-९ कि मी. पूर्व स्थित कैलान[1] वन के बेटी बांध पहाड़ के निकट कोहबरवा-पहाड़ शैलाश्रय में १८ और चम्बल के मोड़ी शैलाश्रय में २८ नर्तकों के चित्र अंकित हैं (गुप्त वही, ३७९—नृ० वा० फ० VI, २)।

मुक्खा-दरो के शैलाश्रय में ऊपर बायीं ओर हाथ में हाथ डाल कर नाचती तीन आयताकार आकृतियां चित्रित हैं। घोड़मंगरा शैलाश्रय में दो नर्तकों को हाथ में हाथ थाम कर ऊपर उठाए हुए, एक को दोनों हाथ कमर पर रखे तथा दो को हवा में बाहें उछाल कर नाचते चित्रित किया गया है।

यद्यपि कुष्पिहवा के नृत्य-दृश्य अपेक्षाकृत बहुत बाद के हैं, लेकिन सफेद, काले, गेरुए और सूखे खून जैसे रंगो के योग से बनाया गया इनमें से एक दृश्य अत्यन्त सुन्दर और दुर्लभ है। कुछ रंग प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न हुए जान पड़ते हैं। पूरे दृश्य पर 'पैटीनेशन' की खासी मोटी पर्त जम गई है। बीच-बीच से चप्पड़ भी छूट रहे हैं। इसमें चार स्त्री व चार पुरुषों को हाथ में हाथ डाल कर, स्त्रियों को कमर में सम्भवतः झालरदार खाल का परिधान धारण करके और पुरुषों को भी वस्त्रों से सज्जित होकर नाचते हुए प्रदर्शित किया गया है। बीच वाले युग्म की विशेष साज-सज्जा स्पष्ट दिखती है। इनके गले से ऊपर के भाग में लाल, सफेद और काले रंगों की सहायता से आंखें व शिरोभूषा का सुन्दर चित्रण दृष्टव्य है।

दूसरे दृश्य के चित्रण में केवल एक ही रंग का उपयोग किया गया प्रतीत होता है किन्तु सम्भवतः प्राकृतिक कारणों से समूह के चार नर्तकों का रंग उड़ जाने से वे मटमैले-सफेद रंग के जान पड़ते हैं जबकि अन्य दो धुंधले हो कर हल्के गेरुए रंग के लगते हैं। शिरोभूषा छोड़ कर अन्य दृष्टियों से इसकी तुलना मध्य प्रदेश के चम्बल क्षेत्र के मोड़ी शैलाश्रय में चित्रित नृत्य-दृश्य से की जा सकती है (गुप्त, वही)।

ललमनिया पहाड़ से प्राप्त गेरुए रंग के त्रिभुजाकार नर्तक भी अपेक्षाकृत बाद के जान पड़ते हैं। ऐसे दृश्य ताम्राश्म युगीन और कहीं-कहीं ऐतिहासिक काल के पात्रों पर मिलते हैं। यद्यपि इनकी लोकप्रियता अधिक नहीं दिखती, फिर भी, ऐसे चित्र भीम-बेटका (सांकलिया–१९७४ : ४५८-४९२; मठपाल–वही) से भी प्राप्त हुए हैं।

घेरा बना कर नाचते क्रमशः २४ और २५ नर्तकों के दो समूह दुअरा की छतरीनुमा

1—ये चित्र लेखक द्वारा शोध कार्यों के संदर्भ में १९७८ में किए गए सर्वेक्षण के अन्तर्गत देखे गये थे।

शैलाश्रय में पाये गये हैं। इनमें से एक में एक पुरुष व एक स्त्री को आमने-सामने परस्पर दोनों हाथ ऊपर उठा कर थपोड़ी मारते और वेंणियां लहराते हुए नृत्य की अत्यन्त स्वाभाविक मुद्रा में चित्रित किया गया है। आमने-सामने हाथ उठा कर नाचने वाले नर्तकों के दो जोड़े भी इस दृश्य में सम्मिलित हैं। दोनों दृश्य सूखे रक्त जैसे रंग से चित्रित किये गये हैं जो कि अब बहुत धुंधले पड़ गए हैं। चट्टानी सतह से चप्पड़ छूटते जाने के कारण इनका अस्तित्व अधिक दिन का नहीं जान पड़ता है (रेखा चि० सं० ६)।

कउआखोह के २७ अलमस्त नर्तकों, घोड़मंगरा, हरना-हरनी और राजा का बैठका के **अनिश्चित क्रम वाले नर्तक** एक वर्ग में रखे जा सकते हैं। हरना-हरनी के ऊपरी शैलाश्रय में कन्धों से ऊपर हाथ उठाये सामान्य नर्तक के साथ आयताकार नर्तकों का समूह चित्रित है।

कउआखोह के सभी चित्र सूखे रक्त जैसे रंग से बनाये गये थे किन्तु प्राकृतिक कारणों से कुछ के रंग उड़ गये हैं। कुछ आकृतियां अंशतः गाढ़ी व हल्की दिखती हैं। पानी लगाने पर २७ नर्तकों का स्वरूप स्पष्ट दिखता है। बिना कोई कतार, निश्चित क्रम अथवा मुद्रा बनाए नृत्य के चरम तक पहुंचे नर्तकों का चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक बन पड़ा है। बीचोबीच सम्भवतः किसी विशेष पक्षी के परों की शिरोभूषा से सज्जित एक हाथ में कमान और दूसरे में हारपून लेकर नाचते मुख्य नर्तक का चित्रण किया गया है। एक नर्तक मुंह से कोई वाद्ययन्त्र लगाये है और अगल-बगल, ऊपर-नीचे चारों ओर नृत्य की मस्ती में झूलते नर्तकों का अंकन दृष्टव्य है।

सोरहो घाट, दुअरा, गोहमनवां, हरना-हरनी, मूड़ा और घोड़मंगरा से **एकाकी-नर्तकों** के चित्र मिले हैं। इनमें तीन नर्तक दुअरा और मुक्खादरी के नर्तकों की तरह बैठने की मुद्रा में, एक नर्तक दोनों हाथ ऊपर उठाये हुए और तीन आयताकार हैं। गोहमनवा का एक द्विरंगी नर्तक शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

सूगापांख, मतहवा, हरना-हरनी और मुक्खादरी से **दो-दो नर्तकों के समूह** भी प्रकाश में आये हैं। मतहवा और मुक्खादरी के नर्तक हाथ उठाये बैठने की मुद्रा में चित्रित हैं। सूगापांख के चमकदार पीली किनारी व सूखे खून जैसे रंग की दोहरी लाइनों से चित्रित आयताकार स्त्री-पुरुष आकृतियां द्विरंगी नर्तकों में विशेष स्थान रखती हैं। स्त्री को पुरुष की अपेक्षा बड़े आकार में दर्शाया गया है।

कउआखोह, हथबनवा, मतहवा, घोड़मंगरा और दुअरा के दृश्य नृत्य भंगिमाओं,

अंग-परिचालन, लय-गति और शैली की दृष्टि से अनोखे हैं। सादी लाइनों के माध्यम से अभिव्यक्त गहरे नृत्य-भावों को देख कर आदिम कलाकारों की कुशलता और भाव-बोध पर अचरज होता है। कदाचित ऐसे दुर्लभ नृत्य-दृश्य अन्य स्थलों से नहीं मिल सके हैं।

बिना कोई कतार, निश्चित क्रम अथवा मुद्रा बनाये नृत्य की चरमावस्था तक पहुंचते कउआखोह के नर्तकों का चित्रण अत्यन्त भावपूर्ण बन पड़ा है। सामान्य रेखाओं की सहज लहरियों में मानो नृत्य की आत्मा ही उतर गई है। नर्तकों के एक-एक अंग, एक-एक भंगिमा से नृत्य-रस टपका पड़ता हैं। विभिन्न मुद्राओं में हाथ उठाते, घुमाते, लहराते पैरों को विशिष्ट मोड़ दे कर कहीं तनते, कहीं झुकते, कहीं झूम कर उल्टे-सीधे भूमि की ओर झुके जाते अनोखे नर्तकों का उल्लास अद्भुत हैं। बीचो-बीच छोटी-बड़ी सात फुल्लियों और संभवतः किसी पक्षी के दो लम्बे पंखों से सुसज्जित अत्यन्त आकर्षक शिरोभूषा से सजा, दायें हाथ में कमान और बायें में गोल सिरे व दोनों ओर कांटों वाला अनोखा भाला अथवा हारपून उठा कर गजब का लचाव लिये नाचते निराले नर्तक का ठाठदार अंदाज बरबस नजरें बांध लेता है। संभवतः यह पूरे कबीले का मुखिया अथवा ओझा है। इसके उभरे हुए वक्ष, कमर से कन्धे, गर्दन और पैरों का सधाव अनोखा है। ऐसा सजीला नर्तक भारत क्या सारी दुनिया में शायद ही कहीं ढूंढे मिले। इसके ऊपर और बायें चित्रित दो लम्बे नर्तक पैरों में बांस बाँध कर नाचते सरकसी कलाकारों जैसी शैली में प्रदर्शित हैं। इसी तरह सबसे दायें नीचे और बायीं ओर चित्रित नर्तकों के अंग-परिचालन भी थिरकन से परिपूर्ण हैं। मुख्य नर्तक के दायें थोड़ा हट कर आधुनिक टिवस्ट शैली के अनुरूप नृत्यरत छोटा नर्तक भी दर्शनीय है। झूमते-थिरकते मगन-मन नर्तक दोहरे हुए जा रहे हैं। देखने वाले के मन में आनन्द की हिलोरें उठने लगती हैं।

दुअरा शैलाश्रय के घेरा बनाकर नाचते नर्तकों का चित्रण भी दुर्लभ है (चित्र–वही)। इसमें सामने की ओर हाथ उठा कर, तनिक सा घुटना झुका कर हाथों की थपोड़ी मारकर नाचते दो मुख्य नर्तक दृष्टव्य हैं। उनकी वेणियां हवा में लहराती दर्शायी गयी हैं, जिनके फैले हुए सिरे आधुनिक समय में रची जाने वाली सुरूचिपूर्ण चोटी के छोर पर छितरी केशराशि से साम्य रखते हैं। इसी समूह में दो अन्य जोड़े भी एक-दूसरे की ओर मुख करके थपोड़ी मार कर नाचते हुए प्रदर्शित हैं। यद्यपि आकृतियों में निश्चित लांक्षनों का अभाव है, फिर भी, प्रत्येक जोड़े में एक पुरूष और एक स्त्री का चित्रण किया गया प्रतीत होता है। नर्तकों की भंगिमाएं, गति और चित्रण-शैली आकर्षक है।

ग्यारह नर्तक पश्चिम दिशा में दोनों हाथ ऊपर उठाये घेरे में नाचते हुए और छे को संभवतः खाल का लबादा ओढ़े दिखलाया गया है। मुख्य नर्तकों के अतिरिक्त अन्य के शरीर-सौष्ठव व अनुपात का ध्यान नहीं रखा गया है। केवल हाथ-पैर बना कर शेष धड़ सीधी रेखाओं से अंकित किया गया है। लबादाधारी (९) नर्तकों के सिर तिकोने

और सिरों से निकले हुए हाथ दर्शाये गये हैं। कुछ के धड़ वाले हिस्से तिरछी लाइनों से भर दिये गये हैं।

उपरोक्त दृश्य के ठीक नीचे उससे भी अधिक धुंधले २५ नर्तकों का एक अन्य घेरा भी दर्शनीय है (चित्र-वही)। इसमें मुख्य नर्तकों का चित्रण नहीं मिलता। बीस नर्तक बायीं ओर मुख करके दोनों हाथ ऊपर उठाये प्रदर्शित हैं। चार नर्तकों की गति कुछ ऐसी है मानो नृत्योल्लास में वे दोनों हाथ उठाये, घुटने लहरा कर, बैठने-बैठने को हो रहे हैं। चार पुरुष-नर्तक स्पष्ट लक्षणों से पहचाने जाते हैं। इनके साथ अन्य नर्तकों का चित्रण भी हुआ होगा लेकिन अब वे इतने धुंधले हो गये हैं कि स्पष्ट पहचाने नहीं जाते।

द्विरंगी नर्तकों में हथबनवा के विवस्त्र नर्तक सर्वाधिक उल्लेखनीय एवं दुर्लभ उदाहरण हैं। इसमें बायीं ओर मुख करके हाथों में डण्डे अथवा अन्य कोई उपकरण लेकर नाचते नर्तकों का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण किया गया है। वक्ष, कटि, गर्दन और कलाई से लोच लेकर मुड़े लम्बे हाथ नृत्य की अद्भुत गति में ढले जान पड़ते हैं। ऐसे उदाहरण अन्य कहीं देखने को नहीं मिले। सिर से ऊपर उठ कर विशिष्ट मोहक मुद्रा में मुड़ी अजानु बाहों और पैर के पंजों से हाथ की अंगुलियों के पोर तक की नरम लचक ध्यानाकर्षक है। शरीर सौष्टव और अंग-प्रत्यंगों के संतुलित अंकन से हथबनवा के ये नर्तक मूल रूप में सात फिट से कम ऊँचे नहीं जान पड़ते। सधावपूर्वक संचालित कदम, उल्लसित भंगिमाएं, दबाव से मुड़े लम्बे बेंत जैसी लम्बी टाँगों, कमर, कूल्हे, गरदन और बाँहों वाले निःशंक नाच रहे इन अनावृत नर्तकों की गति, लय और भाव अनोखे हैं। वनैले एकांत के इस शैलाश्रय के आदिम-चितेरों की यह जीवंत कलाकृतियाँ आश्चर्य में डाल देती हैं।

सूगापांख और गोहमनवा के नर्तक अपनी धातुई चमक से युक्त रंगों के लिए उल्लेखनीय हैं। संभवतः इसके लिए रंगों में किसी वनस्पति विशेष का रस मिश्रित किया जाता रहा होगा। कइरी, मतहवा, मुक्खादरी, घोड़मंगरा, और झरिया के नर्तकों का भाव-पक्ष अत्यन्त सफलापूर्वक प्रतिच्छवित हुआ है।

चित्रण के पूर्व **सतह** तैयार करने के साक्ष्य नहीं मिलते। इसके लिए कभी समतल और कभी खुरदुरी सतहों का एक सा उपयोग किया गया है। ३९.५४ प्रतिशत आकृतियां

गाढ़े सूखे खून जैसे रंग से चित्रित हैं, मूलतः ऐसे ही रंग से चित्रित २६.९८ प्रतिशत नर्तकों का रंग अब हल्का पड़ गया है। ऐसी ही स्थितियों में गाढ़े व हल्के **गेरूए रंग** में चित्रित नर्तकों का अनुपात १४.६ प्रतिशत और ६.० प्रतिशत है। **सफेद** और **काले** रंग से मात्र ४ व ३ चित्रण मिले हैं, इनमें भी सफेद रंग मौलिक नहीं बल्कि मूल रंग के उड़ने से उपजा जान पड़ता है। १०.३२ प्रतिशत नर्तकों के चित्रण के लिए **दो रंगो** का उपयोग किया गया है। इनमें ४ नर्तक सफेद किनारी, ११ नर्तक काली किनारी, व १३ नर्तक चमकदार पीली या गेरूई किनारी के भीतर सूखे खून जैसा रंग भर कर और १३ नर्तक गाढ़े सूखे खून जैसी किनारी के भीतर हल्के रंग से रंग कर चित्रित किये गये हैं। ३ चित्रों के निरूपण में **दो से अधिक रंगों** का उपयोग किया गया है।

रंग तैयार करने के लिए गेरू, चूना-पत्थर और लकड़ी का कोयला घिस कर बनाये गये चूरे में पानी, चर्बी और वनस्पतियों के रस मिलाये जाते रहे होंगे। घिसे हुए गेरू के चूरे में तेल, सिन्दूर, सेम के छिलके और अन्यान्य वनस्पतियों के रस मिला कर तैयार किये गये रंगों से आवासों की सज्जा के लिए चित्र बनाने की परम्परा इस क्षेत्र में अब भी प्रचलित है। कुछ क्षेत्रों में मान्यता है कि रंगों में बाघ अथवा अन्य पशुओं का लहू उपयोग में लाया जाता था, कोई अचरज नहीं कि वास्तव में ऐसा ही होता भी रहा हो। 'रकत के पुतरी' जैसे नाम संभवतः इसी परम्परा में उद्भूत हुए। रंगों में रक्त के उपयोग की संभावना ऐसी ही परम्पराओं के आधार पर यूरोपीय विद्वानों ने भी व्यक्त की है (गार्सिया, गैलोवे और लोम्मेल–१९६९ :२६)।

संभवतः **चित्रण के लिये** बांस की डण्डियाँ, अन्याय वनस्पतियों की कूचियाँ, चिड़िया के पंख, पशुओं के बाल और हड्डियों के उपयोग से बनी तूलिकाओं का उपयोग किया जाता रहा होगा। लगभग ८० प्रतिशत नर्तक **पूरी आकृति** में और अन्य **किनारे की लाइनों में रंग भर** कर चित्रित किये गये हैं। कुछ नर्तक आयताकार आकृतियों में आड़ी-तिरछी रेखाएं भर कर और कुछ **त्रिकोणात्मक, गोल** या **अण्डाकार** ज्यामितिक आकृतियों से बनाये गये हैं केवल दो नर्तकों की आँखें स्पष्ट चित्रित हैं। कुछ नर्तकों के खुले हुए मुंह भी प्रदर्शित हैं। हाथ-पैर की अंगुलियाँ बनाने की प्रवृत्ति प्रायः नहीं के बराबर है।

नृत्य-दृश्यों में चित्रित आकृतियों में से १३.०९ प्रतिशत **पुरुषों**, ५.५४ प्रतिशत **स्त्रियों** और चार **बच्चों** की पहिचान स्पष्ट है। ३ नर्तकों में **स्त्री-पुरुष** दोनों अंग प्रदर्शित हैं। ७९.५९ प्रतिशत नर्तकों में स्त्री-पुरुष की पहिचान के लिए मुखर लक्षण नहीं दिखते। ९.५७ प्रतिशत नर्तक **नग्न** और ५.७९ प्रतिशत **वस्त्र** धारण किये प्रदर्शित हैं, शेष नर्तकों के वस्त्रावस्त्र का निर्धारण नहीं किया जा सकता। सबसे **बड़ा नर्तक** ४३.२ × १५.६ सेमी० गोहमनवा से और सबसे **अदने नर्तक** २.२ × १.३ व अन्य, हरना-हरनी से पाये गये हैं। नर्तकों की **ऊँचाई** सामान्यतः ५-१० सेमी० और **चौड़ाई** २-७ सेमी०

है। केवल ८ नर्तक **एकल** और ८ दो-दो के **जोड़े** में चित्रित हैं। अन्य सभी नर्तक समूहों में नृत्यरत दर्शाये गये हैं। एक समूह में **सर्वाधिक २७ नर्तकों** का अंकन कउआखोह से मिला है। दुअरा के घेरा बनाकर नाचते नर्तक-समूहों की संख्या भी क्रमशः २४ व २५ है। **सबसे अधिक ७ नृत्य-दृश्य** मुक्खादरी व घोड़मगरा और ४९ **नर्तक** दुअरा के शैलाश्रयों में चित्रित हैं। १३.६ प्रतिशत नर्तक **कमान, हारपून,** डण्डा अथवा अन्य कोई उपकरण ले कर नृत्य करते, दो नर्तक मुंह से बजाने वाला **वाद्ययन्त्र** लेकर और ९.३२ प्रतिशत नर्तक एक से छे फुल्लियों व चिड़िया के पंखों से सुसज्जित **शिरोभूषा** धारण किये प्रदर्शित हैं। ४१.८१ प्रतिशत नर्तक बायीं ओर और २२.६७ प्रतिशत नर्तक दायीं ओर **कदम** बढ़ाते चित्रित हैं, ३४.७६ प्रतिशत नर्तकों की दिशा का निर्धारण संभव नहीं है।

उपरोक्त दृश्यों के **कालक्रम-निर्धारण** हेतु यद्यपि कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी, चित्र की शैली, स्थिति, विषय एवं परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मोटे तौर पर उनका अनुमान लगाया जा सकता है। ललमनिया और कुप्पिहवा के हाथ में हाथ थाम कर नाचते ज्यामितिक शैली के नर्तक सबसे बाद के जान पड़ते हैं, इनके रंग अपेक्षाकृत चटक और चित्र स्पष्ट हैं। कुप्पिहवा के नर्तक सम्भवतः खाल जैसा कोई वस्त्र धारण किये प्रदर्शित हैं। इनकी तुलना भीमबेटका के पूर्व-ऐतिहासिक काल में रखे गये नर्तक-समूह (मठपाल–१९७९,३० चि०–२), नावदा-टोली (सांकलिया–१९७४ : ४५८-४९२) और तूमास, मिस्र (इ.आ.रि. १९६१-६२: ६९-७०, प्लेट cxvia) के उत्खनन से प्राप्त पात्रों (लगभग १५०० ई. पू.) पर चित्रित नृत्यरत मानव आकृतियों से की जा सकती है।

कउआखोह और हथबनवा के नृत्य-दृश्य अन्य चित्रों की अपेक्षा अधिक अस्पष्ठ एवं बुरी स्थिति में हैं जबकि उनका चित्रण ऐसी जगह पर किया गया है जहां वर्षा और ताप का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ता है। इनमें नर्तकों को नग्न और **हारपून जैसे उपकरणों** के साथ चित्रित किया गया है जो इनकी प्राचीनता के संदर्भ में स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। शैली के अनुसार ये हारपून लकड़ी अथवा अस्थि से निर्मित प्रतीत होते हैं। उनके निर्माण में उत्तर पुराश्म अथवा मध्याश्म कालीन पाषाण उपकरणों के उपयोग की भी संभावना है। मिर्जापुर के विभिन्न शैलचित्रों में निरुपित हारपूनों की बनावट इस विचार को बल प्रदान करती है। इस संदर्भ में घोड़मंगरा-शैलाश्रय के

चित्र सं० १

हथवनवा-शैलाश्रय

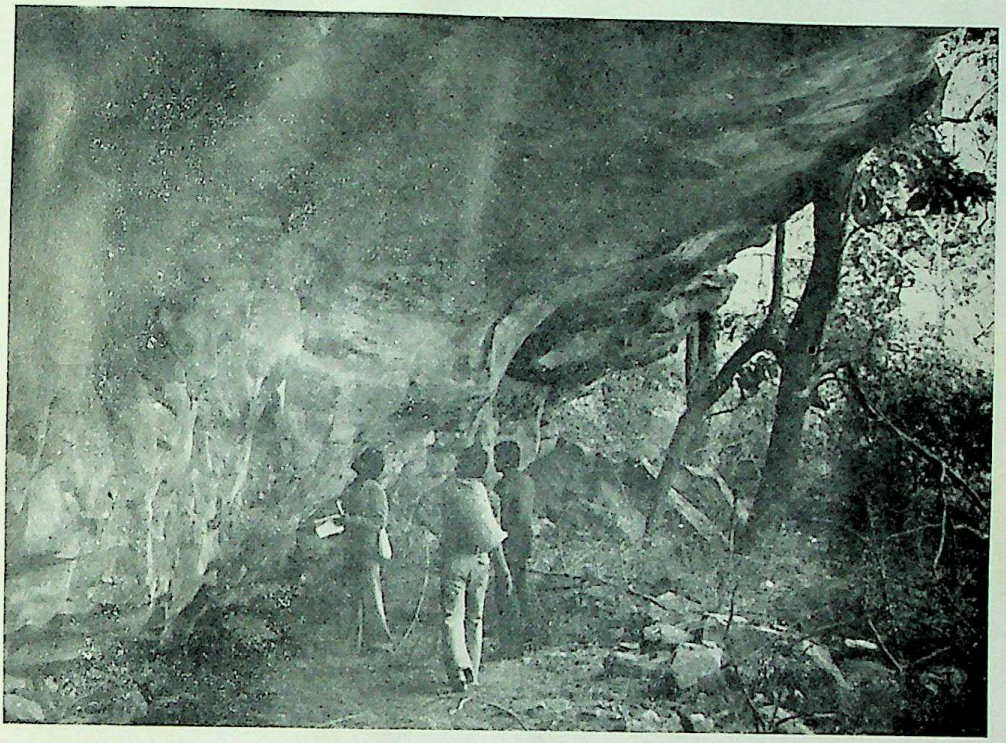

5419

चित्र सं० २

मुक्खा-दरी के शैल-चित्र

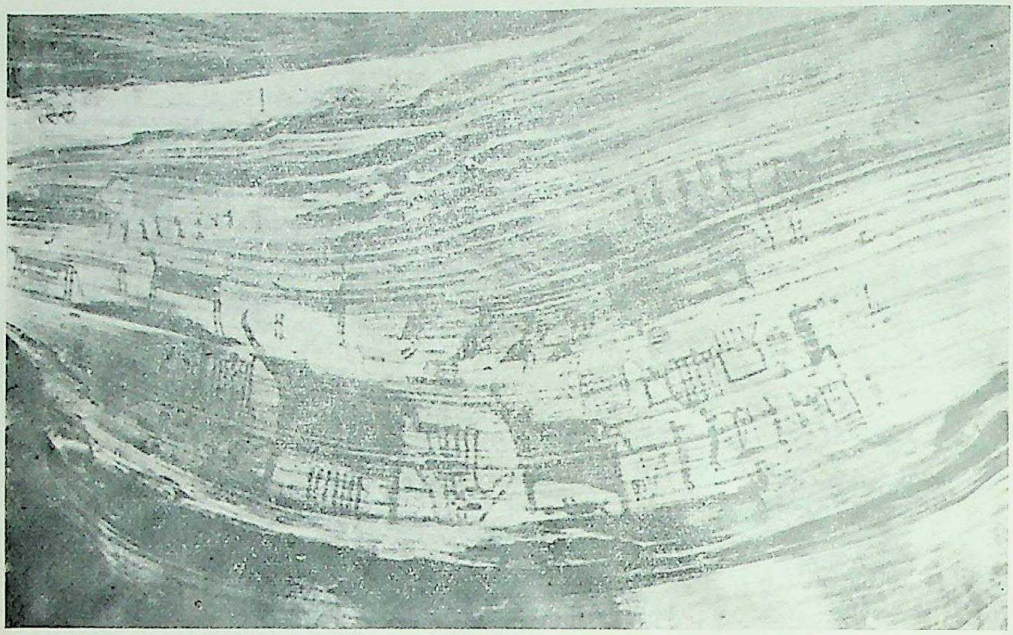

चित्र सं० ३

मुक्खा-दरी के शैल-चित्र

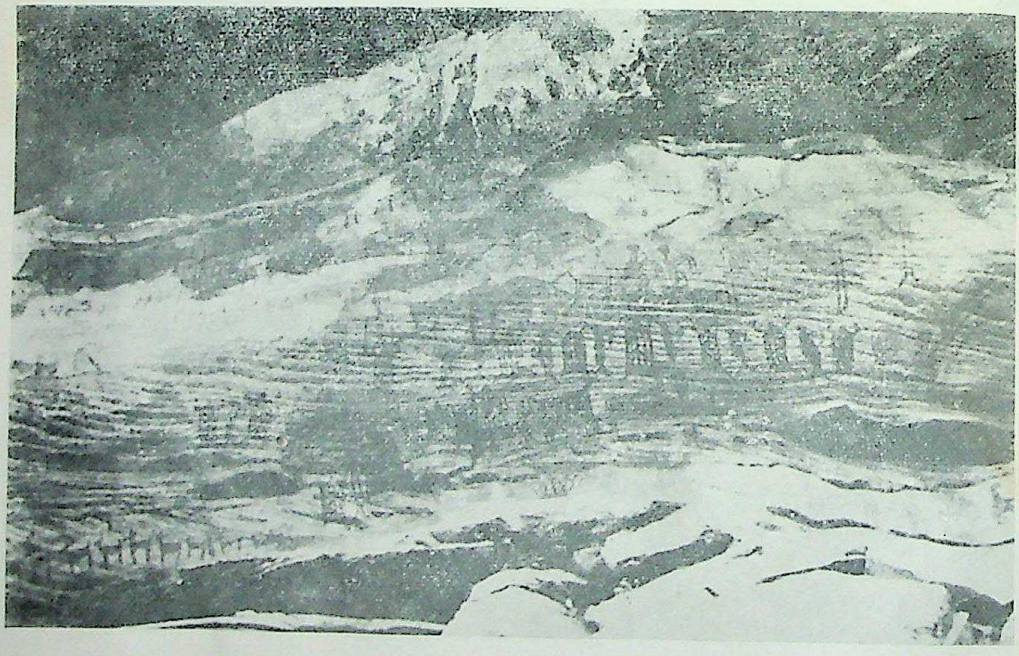

चित्र सं० ४

हथवनवा-शैलाश्रय का नृत्य-दृश्य

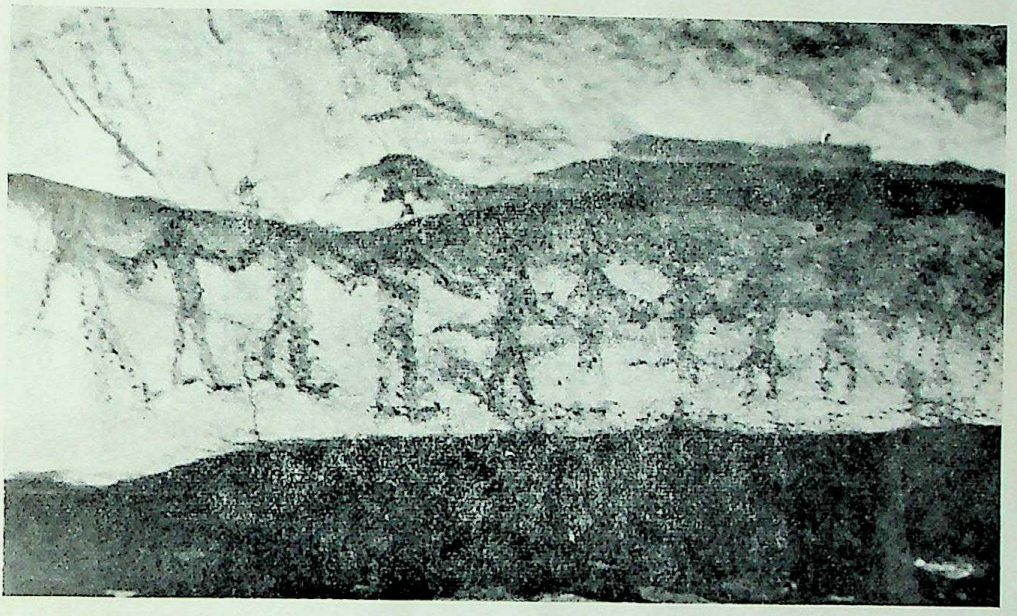

खाचित्र सं० ६

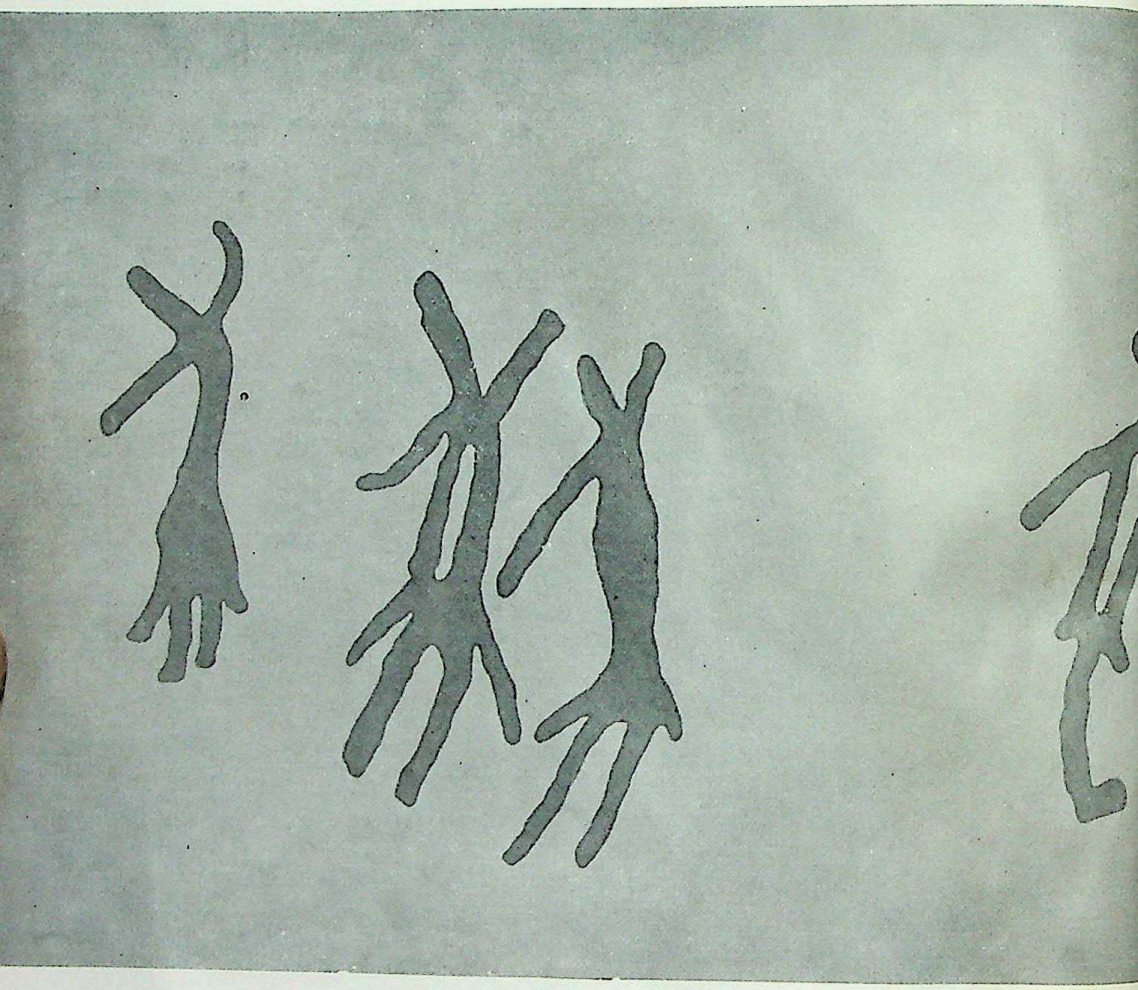

मतहवा-शैलाश्रय का नृत्य-दृश्य

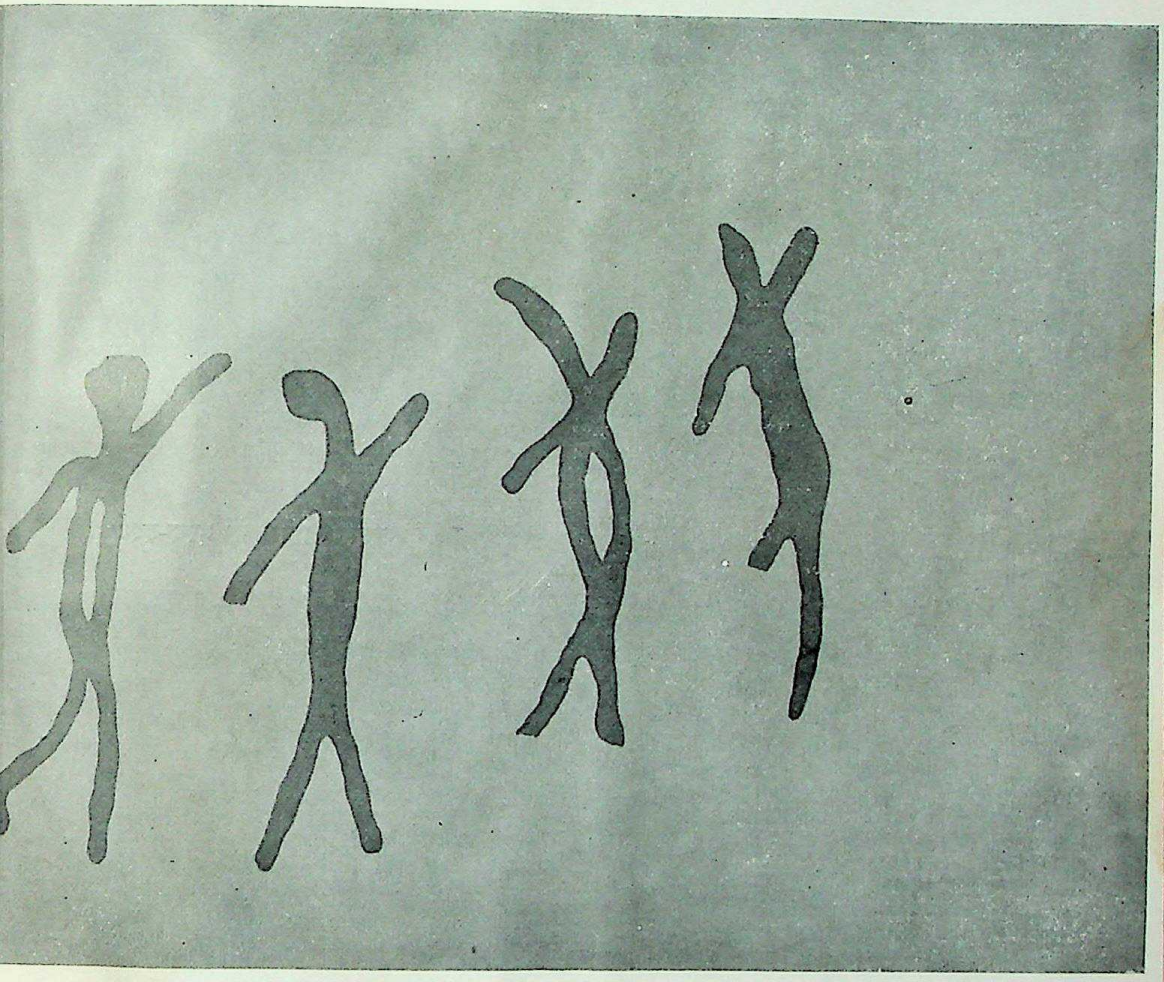

चित्र सं० ५ कउआ-खोह का नृत्य-दृश्य

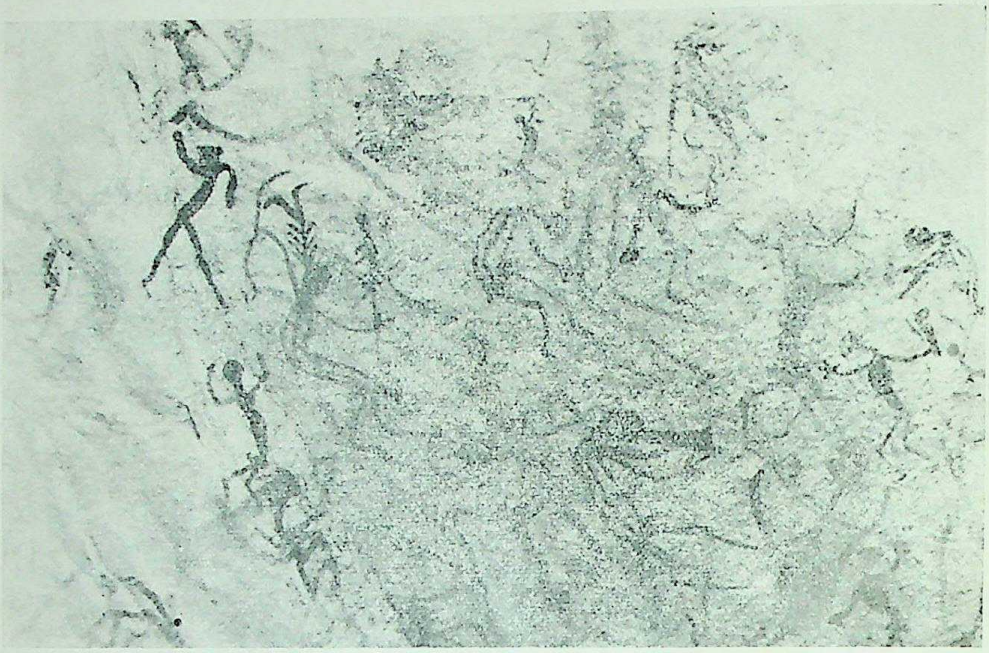

रेखाचित्र सं० ६ दुअरा-शैलाश्रय के नृत्य-दृश्य

रेखाचित्र सं० ७

झरिया-शैलाश्रय का नृत्य-दृश्य

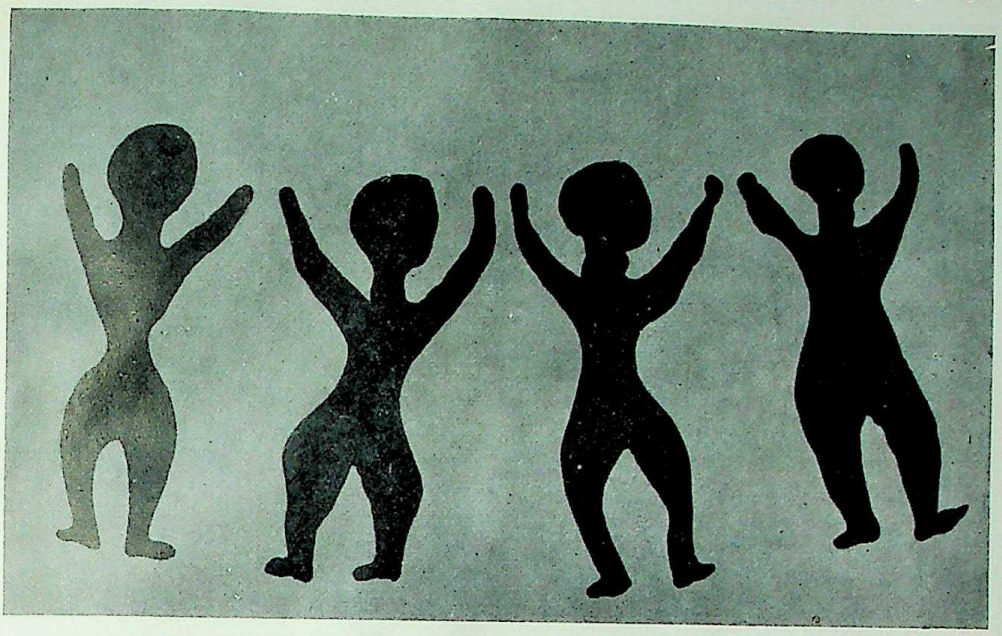

रेखाचित्र सं० ८

मतहवा-शैलाश्रय के चित्र

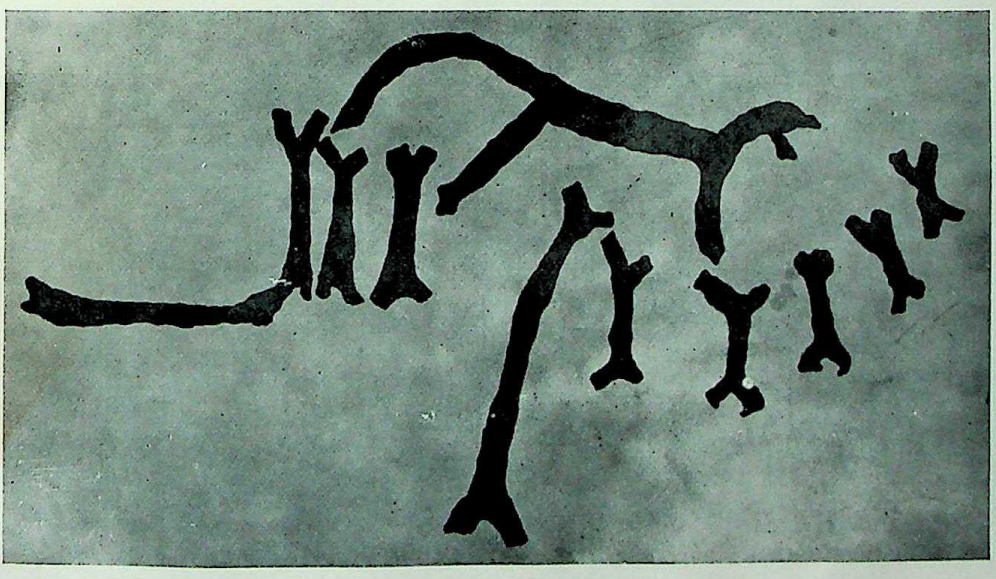

चित्र सं० १०

हथबनवा-शैलाश्रय का नृत्य-दृश्य

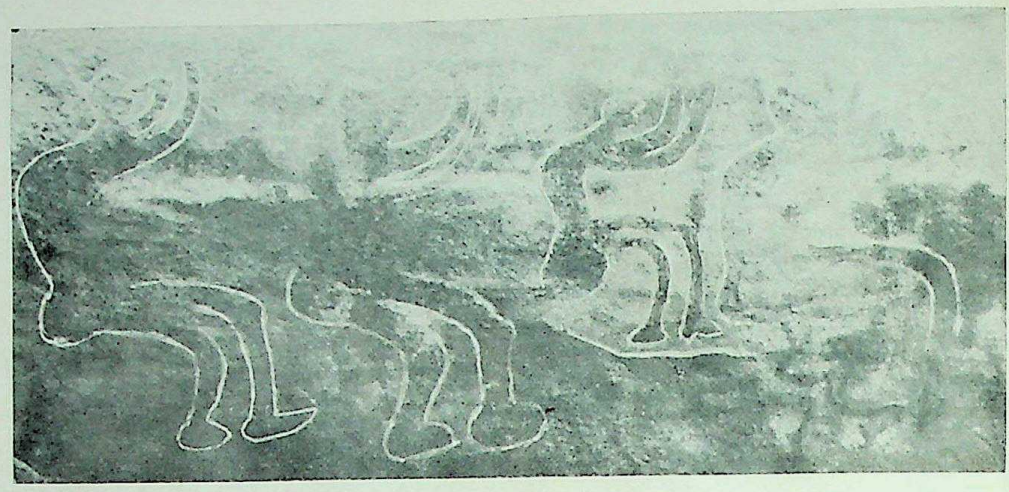

रेखाचित्र सं० ११

घोड़मंगरा-शैलाश्रय के द्विरंगी नर्तक

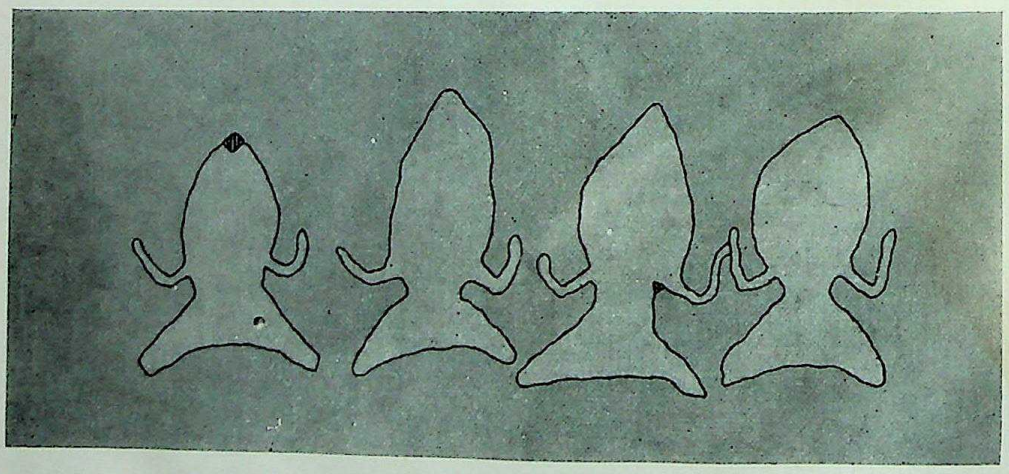

आखेट-दृश्यं के आखेटकों के हारपून विशेष दृष्टव्य हैं। ऐसा ही मत बी० बी० लाल ने भी व्यक्त किया है (१९५१ : ३४-३५)।

ताम्र-निर्मित उपकरणों के साथ हारपूनों की तिथि लगभग १०००–२००० ई० पू० मानी गयी है (अग्रवाल–१९७९)। बुर्जहोम से प्राप्त अस्थि-निर्मित हारपून की तिथि २५००–१५०० ई० पू० है (सांकलिया–१९७४ : २९८–३०३), पश्चिम यूरोप में इनकी तिथि लगभग १५,०००–१०,००० ई० पू० और एशिया में मंचूरिया से ५,००० ई० पू० प्राप्त हुई है (लोम्मेल–१९६६ : ४५)। हाल ही में बेलन-घाटी के लोहन्दा-नाला के ग्रैवेल III से प्राप्त एक अस्थि–उपकरण की पहिचान मातृदेवी से की गई है (मिश्र–१९७७ : ४९, प्लेट V) किन्तु इसकी आकृति मातृदेवी की अपेक्षा हारपून के अधिक निकट लगती है। कहीं यह हारपून ही तो नहीं (?)।

उल्लेखनीय है कि शैल-चित्रों में हारपूनों के चित्रण की बहुलता के बावजूद भी उनके उदाहरण मिर्जापुर क्षेत्र में नहीं मिल सके हैं। यह तथ्य इनके हड्डी व लकड़ी की सहायता से बने होने की संभावना को बल प्रदान करता है। लकड़ी व अस्थि से निर्मित होने के कारण उनमें से अधिकांश समय के प्रभाव से नष्ट हो गये होंगे। मिर्जापुर क्षेत्र में भविष्य में होने वाले पुरातात्विक-उत्खनन-सर्वेक्षण, इस दिशा में और अधिक प्रकाश डाल सकेंगे। फिर भी, उपरोक्त तथ्यों और विभिन्न क्षेत्रों में हारपून की तिथियों के अनुसार अस्थि अथवा काष्ठ-निर्मित हारपूनों के संदर्भ में ताम्र-हारपूनों के निर्माण-काल (लगभग २००० ई० पू०) से पूर्व कम से कम २५०० वर्षों का विकास-क्रम अनुमानित हो सकता है।

सोहागी घाट (स्मिथ–१९०६ : १८७), लहरिया डीह (पन्त–१९७७ : ५), भीम बेटका (मठपाल–वही) और लेखहिया (मिश्र–वही : ६३) शैलाश्रयों के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों के साथ **मध्य पाषण कालीन स्तरों से घिसे हैमेटाइट के टुकड़ों की प्राप्ति** भी कालक्रम-निर्धारण में सहयोग प्रदान करती है। इस दृष्टि से भीम-बेटका और लेखहिया के साक्ष्य विशेष विचारणीय हैं जिनके मध्य-पाषाण-कालीन स्तरों की तिथि क्रमशः ५००० ई० पू० और ६०००–२००० ई० पू० (मठपाल–१९७७ : २२; मिश्र–१९७७ : ६३) मानी गयी है। लेखहिया के चित्र, विषय-वस्तु व शैली के अनुसार उपरोक्त चित्रों से बहुत बाद के प्रतीत होते हैं अतः निश्चय ही कउआ खोह व हथबनवा के चित्र २००० ई० पू० से पर्याप्त पूर्व के होने चाहिए। ललमनिया और लेखहिया के दृश्यों और कउआ खोह व हथबनवा के दृश्यों के मध्य कम से कम नर्तकों के दो अन्य वर्ग रखे जा सकते हैं। बैठने की मुद्रा में चित्रित नर्तकों में साम्य के आधार पर मुक्खा-दरी, मतहवा, और दुअरा के प्रमुख दृश्य एक वर्ग में तथा घोड़मंगरा, मतहवा, तुरियानी, मगरदहा और दंतहा पहाड़ के चटक व द्विरंगी चित्र दूसरे वर्ग में आयेंगे। अतः ये उपरोक्त दृश्यों की और अधिक प्राचीनता की ओर संकेत करते हैं।

इस प्रकार मिर्जापुर के शैल-चित्रों के अन्तर्गत आने वाले नृत्य-दृश्यों के संदर्भ में आज से लगभग ७,००० वर्ष पूर्व तक की प्राचीनता के प्रमाण उपलब्ध हैं। बहुत संभव है कि डा० मठपाल और डा० वाकाणकर के मतानुसार (क्रमशः १०,००० और १५,००० ई० पू०) भविष्य में और अधिक प्राचीन पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त हो जायें (मिश्र और मठपाल–१९७९ : २७–३३; मठपाल–१९८१ : १७)।

सन्दर्भ

अग्रवाल, डी. पी.	१९७१	**दि कॉपर ब्रान्ज एज इन इण्डिया,** मुन्शीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली।
	१९७९	**दि अर्ली मेटलॉज इन इण्डिया ऐण्ड इट्स ओरिजिन,** प्रेजेन्टेड ऐट डेनमार्क, १९ नवम्बर १९७९, अरबस यूनि०, कोपेनहेगन।
अग्रवाल, डी.पी. और जोशी एस.सी.	१९७८	रॉक पेन्टिग्स इन कुमायूं, नोट्स ऐण्ड न्यूज, **मैन ऐण्ड एन्वाएर्नमेन्ट,** वॉ० II प्रीहिस्टॉरिक एण्ड क्वाटरनरी स्टडीज, द्वारा फिजिकल रिसर्च लैबोरेट्रीज, अहमदाबाद।
एलिमेन, एस.	१९५७	**दि प्रीहिस्ट्री ऑफ अफ्रीका,** हॉकिसन ऐण्ड क० लि०, लन्दन।
कॉकबर्न, जे.	१८८३अ	ऑन दि रीसेन्ट एक्जिस्टेन्स ऑफ राइनोसोरस, इन दि नार्थ वेस्ट प्राविन्स ऐण्ड ए डिस्क्रिप्सन ऑफ आर्काइक रॉक पेटिंग्स फ्राम मिर्जापुर, रिप्रजेन्टिग दि हंटिंग ऑफ दि एनिमल, **जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी,** एल II न० १।
	१८८३ब	ए शार्ट एकाउन्ट ऑफ दि पैट्रोग्राफ इन दि केव्स ऐण्ड रॉक शेल्टर्स ऑफ दि कैमूर रेन्ज इन मिर्जापुर, **प्रोसीडिंग्स ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल।**

	१८९९	केव ड्राइंग्स इन दि कैमूर रेन्ज, **जर्नल आफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ।**
गार्सिया, पी. एल.; गैल्लोवे, जे. ऐण्ड लोम्मेल, ए,	१९६९	**प्रीहिस्टॉरिक ऐण्ड प्रीमिटिव आर्ट,** थेम्स ऐण्ड हडसन, लन्दन ।
गॉर्डन, डी. एच.	१९६०	**दि प्रीहिस्टॉरिक बैकग्राउण्ड ऑफ इण्डियन कल्चर,** एन. एम. त्रिपाठी प्रा० लि० १६४, प्रिन्सेज स्ट्रीट, बम्बई–२ ।
गुप्त, जगदीश	१९६७	**प्रागैतिहासिक भारतीय चित्र कला,** नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली ।
गुप्त, एस. पी.	१९७९	**आर्कलॉजी ऑफ सोवियत सेन्ट्रल एशिया ऐण्ड दि इण्डियन बार्डर-लैण्ड** वॉ II, बी० आर० पब्लिशिग हाउस कार्पोरेशन, ४६१, विवेकानन्द नगर, दिल्ली ११००५२ ।
गूरां, लेओवा आन्द्रे	१९७२	दि इवोल्यूशन ऑफ पैलिओलिथिक आर्ट, ओल्ड वर्ल्ड आर्कलॉजी **फाउन्डेशन ऑफ सिविल साइन्सेज,** डब्लू एच० फ्रीमेन ऐण्ड कम्पनी ६ ०, मार्केट स्ट्रीट, सान फ्रान्सिस्को कैलिफोर्निया ।
घोष, मनोरंजन	१९३२	रॉक पेन्टिग्स ऐण्ड अदर ऐण्टीक्विटीज ऑफ प्रीहिस्टारिक ऐण्ड लेटर टाइम्स, **मेम्वाएर ऑफ दि आर्कलाजिकल सर्वे आफ इडिया** नं० ४ ।
नारायण, ए. के. ऐण्ड पन्त पी. सी.	१९६३-६४	ए समरी एकाउन्ट ऑफ आर्कलाजिकल एक्सप्लोरेशन इन ईस्ट यू० पी० १९६२-६३, **भारती,** बुलेटिन ऑफ दि कालेज ऑफ इण्डोलाजी नं० ८ पार्ट १, वाराणसी ।

बर्किट, एम. सी. १९६३ **दि ओल्ड स्टोन एज ए स्टडी ऑफ पैलिओलिथिक टाइम,** फोर्थ एडीसन, फर्स्ट इण्डियन एडीशन, रूपा एण्ड क० १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता-१२ ।

पन्त, पी. सी. १९७७ **दि पैलिओलिथिक इण्डस्ट्रीज ऑफ साउदर्न यू० पी०,** डाक्टरेट थीसिस (अप्रकाशित), हिन्दू विश्व विद्यालय ।

ब्रूई, एच. १९५२ **फोर हन्ड्रेड सेन्चुरीज ऑफ केव आर्ट,** फ्रांस ।

मठपाल, वाई. १९७७ प्रीहिस्टॉरिक आर्ट ऑफ भीम बेटका, **भीम बेटका : प्रीहिस्टॉरिक मैन ऐण्ड हिज आर्ट इन सेन्ट्रल इण्डिया,** डेकन कालेज पूना ।

१९८१ प्रीहिस्टॉरिक आर्ट ऑफ इण्डिया, **ईस्टर्न ऐन्थ्रोपोलॉजिस्ट,** वॉ ३४, नं० १, जन-मार्च, एथनोग्राफिक फोक कल्चर सोसाइटी, लखनऊ ।

मिश्र, वी. एन. ऐण्ड मठपाल, वाई. १९७९ रॉक आर्ट ऑफ भीम बेटका रीजन, सेन्ट्रल इण्डिया, **मैन ऐण्ड एन्वायर्नमेन्ट** वॉ III, वही ।

मिश्र, वी. डी. १९७७ **सम ऐसपेक्ट्स ऑफ इण्डियन आर्कलॉजी,** प्रभात प्रकाशन, इलाहाबाद ।

रॉकी, राकेश तिवारी १९८०अ खोहों में खोया अतीत, **धर्मयुग,** ६-१२ जुलाई ।

१९८०ब प्रतिक्रिया, **छायानट,** जनवरी-मार्च अंक १२, उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ ।

	१९८१	**प्रदक्षिणा** (प्रकाशनाधीन), ३/१ कैसरबाग कालोनी, कैसरबाग बारहदरी, लखनऊ ।
लाल, बी. बी.	१९५१	फर्दर कॉपर होर्डस फ्रॉम दि गंगेटिक बेसिन ऐण्ड ए रिव्यू ऑफ दि प्रॉब्लम, **एन्शिएन्ट इण्डिया** नं० ७, नई दिल्ली ।
लोम्मेल, आन्द्रेस	१९६६	**प्रीहिस्टॉरिक ऐण्ड प्रीमिटिव मैन,** पॉल हैमलिन, डेरी हाऊस, रस्सेल स्ट्रीट, लन्दन, डब्लू सी.-२ ।
वाकाणकर, वी. एस.	१९७६	अध्यक्षीय भाषण, इण्डियन सोसाइटी फार प्रीहिस्टॉरिक ऐण्ड क्वाटर्नरी स्टडीज, जयपुर ।
सांकलिया, एस. डी.	१९७४	**प्रीहिस्ट्री ऐण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इण्डिया एण्ड पाकिस्तान,** पोस्ट ग्रेजुएट ऐण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट,पूना ।
सिंह, रामचन्द्र	१९७६	सर्वे, **संग्रहालय पुरातत्व पत्रिका,** बुलेटिन ऑफ म्यूजिकम ऐण्ड आर्कलॉजी इन यू० पी०, वॉ० १७-१८ लखनऊ ।
इण्डियन आर्केलाजी ए रिव्यू		१९५५-५६, १९५९-६०, १९६२-६३, १९६३-६४, १९७०-७१, १९७७-७८ ।

क्रम संख्या	शैलाश्रयों के नाम	कुल नर्तकों की संख्या	नृत्य-दृश्यों की संख्या	स्त्री/पुरुष/बच्चे												रंग		
				पुरुष	स्त्री	बच्चे	स्त्री/पुरुष दोनों लक्षण	अनिर्धारित	सूखे खन जैसा लाल		गेरुआ				सफेद	काला	
									हल्का	गाढ़ा	हल्का	गाढ़ा						
१.	२.	३.	४.	५.												६.		
१.	कउआखोह	२७	१	१५	—	—	—	१२	२१	५	—	१	—			—	—	
२.	कइरी	४	१	१	१	—	—	२	४	—	—	—	—			—	—	
३.	कण्डाकोट	८	१	—	—	—	—	८	—	—	—	८	—			—	—	
४.	कुप्पिहवा	१४	२	७	७	—	—	०	८	—	—	—	४			—	—	
५.	केरवाघाट	३	१	—	—	—	—	३	—	३	—	—	—			—	—	
६.	गोहमनवा	१	१	—	—	—	—	१	—	—	—	—	—			—	—	
७.	घोड़ मंगरा	२७	७	४	३	३	—	१७	३	९	—	—	—			३	—	
८.	झरिया	१२	३	६	५	१	—	—	—	—	—	१२	—			—	—	
९.	ढोकवा महारानी	४	१	—	—	—	—	४	—	३	—	१	—			—	—	
१०.	तुरियानी	१३	२	—	—	—	—	१३	—	७	६	—	—			—	—	
११.	दंतहापहाड़	८	१	—	—	—	—	८	—	८	—	—	—			—	—	
१२.	दुअरा	४९	३	४	१	—	—	४४	४८	१	—	—	—			—	—	
१३.	धनवैरादह	१८	१	—	—	—	—	१८	—	—	१८	—	—			—	—	
१४.	निम्बहियामयरा	४	१	—	—	—	—	४	४	—	—	—	—			—	—	
१५.	मतहवा	३१	६	४	—	—	—	२७	—	८	—	—	—			—	—	
१६.	मगरदहा	२१	२	—	—	—	—	२१	—	२१	—	—	—			—	—	
१७.	मुक्खादरी	४८	७	—	—	—	—	४८	१८	३०	—	—	—			—	—	
१८.	मूड़ा-लिखनिया	१२	४	—	—	—	—	१२	—	—	१२	—	—			—	—	
१९.	राजा का बैठका	२१	४	३	—	—	—	१८	—	२१	—	—	—			—	—	
२०.	ललमनिया	७	१	—	—	—	—	७	—	—	७	—	—			—	—	
२१.	सहवइया	१५	१	—	—	—	—	१५	—	—	१५	—	—			—	—	
२२.	सोरहोघाट	१	१	—	—	—	—	१	—	—	—	१	—			—	—	
२३.	सूगापांख	२	१	१	१	—	—	—	—	—	—	—	—			—	—	
२४.	हथवनवा	१४	२	४	—	—	—	१०	—	१०	—	—	—			—	४	
२५.	हरनाहन्नी	३३	५	३	४	—	३	२३	१	३१	—	१	—			—	—	

मिर्जापुर के शैलाश्रयों में चित्रित नृत्य-दृश्यों का विवरण

State Museum

क्रम संख्या	शैलाश्रयों के नाम	कुल नर्तकों की संख्या	नृत्य-दृश्यों की संख्या	स्त्री/पुरुष/बच्चे					रंग														शस्त्र धारी नर्तक				वाद्य उपकरण	वस्त्रावस्त्र		शिरोभूषा									नर्तकों के पैरों की दिशा			अन्य अलंकरण		
				पुरुष	स्त्री	बच्चे	स्त्री/पुरुष दोनों लक्षण	अनिर्धारित	सूखे खन जैसा लाल हल्का	सूखे खन जैसा लाल गाढ़ा	गेरुआ हल्का	गेरुआ गाढ़ा	सफेद	काला	द्विरंगी: सफेद किनारा भीतर सूखे खून जैसा	द्विरंगी: किनारा काला, भीतर सूखे खून जैसा	द्विरंगी: किनारा चमकदार पीला या गेरुआ, भीतर सूखे खून जैसा	द्विरंगी: किनारा गाढ़ा सूखे खून जैसा, भीतर रंग हल्का	बहुरंगी	धनुर्धारी	डण्डधारी	हारपून धारी	अस्पष्ट उपकरण	कुल शस्त्रधारी		नंगे	वस्त्र	वस्त्रों की पहिचान नहीं	बेंगी से सज्जित	१ फुलली वाले टोपे से सज्जित	२ फुलली वाले टोपे से सज्जित	३ फुलली वाले टोपे से सज्जित	४ फुलली वाले टोपे से सज्जित	६ फुलली वाले टोपे से सज्जित	चिड़ियों के परों वाले टोपे से सज्जित	कुल अलंकृत	बायें	दायें	सीधे या अस्पष्ट	कमर में फुलली	कानों में कुण्डल	कुहनी से लटकती फुलियां
१.	२.	३.	४.	५.					६.										७					८.		९.		१०.									११.			१२.		
१.	कउआखोह	२७	१	१५	–	–	–	१२	२१	५	–	१	–	–	–	–	–	–	१०	–	४	३	१७	१	१५	५	७	–	१	–	१	१	–	१	४	८	१६	३	–	–	–
२.	कइरी	४	१	१	१	–	–	२	४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	४	–	–	–	४	–	४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	४	–	–	–	–	–
३.	कण्डाकोट	८	१	–	–	–	–	८	–	–	–	८	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	८	–	–	–	–	–	–	–	–	३	१	४	–	•	–
४.	कुप्पिहवा	१४	२	७	७	–	–	०	८	–	–	–	४	–	–	–	–	२	–	–	–	–	!	–	–	१४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	–	१२	–	–	–
५.	केरवाघाट	३	१	–	–	–	–	३	–	३	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	३	–	–	–	–	–	–	–	–	३	–	–	–	–	–
६.	गोहमनवा	१	१	–	–	–	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	१	–	–	–	–	–
७.	घोड़ मंगरा	२७	७	४	३	३	–	१७	३	९	–	–	–	३	–	–	११	–	१	–	–	–	४	४	–	–	–	२७	२	–	४	–	१	–	७	६	२	१९	–	–	३
८.	झरिया	१२	३	६	५	१	–	–	–	–	–	१२	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	२	–	–	–	१२	–	–	–	–	–	–	–	४	३	५	–	१	–
९.	ढोकवा महारानी	४	१	–	–	–	–	४	–	३	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	२	–	–	–	४	–	–	–	–	–	–	–	४	–	–	–	–	–
१०.	तुरियानी	१३	२	–	–	–	–	१३	–	७	६	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	२	–	–	–	१३	–	२	–	१	२	–	–	५	४	२	७	१	–	–
११.	दंतहापहाड़	८	१	–	–	–	–	८	–	८	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	८	–	–	–	–	–	–	–	१	१	६	–	–	–
१२.	दुअरा	४९	३	४	१	–	–	४४	४८	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	४	–	४५	२	–	–	–	–	–	–	२	१४	२३	१२	–	–	–
१३.	धनबैरादह	१८	१	–	–	–	–	१८	–	–	१८	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१८	–	–	–	–	–	–	–	–	१७	१	–	–	–	–
१४.	निम्बहियामयरा	४	१	–	–	–	–	४	४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	४	४	–	–	–	–	–	–	–	४	४	–	–	–	–
१५.	मतहवा	३१	६	४	–	–	–	२७	–	८	–	–	–	–	–	११	–	१२	–	–	–	–	–	–	२	४	२५	–	–	–	२	१	–	–	३	१४	१०	७	–	–	–
१६.	मगरदहा	२१	२	–	–	–	–	२१	–	२१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१०	१०	१	–	–	२१	–	१	१	३	४	–	–	९	७	–	१४	–	–	–
१७.	मुक्खादरी	४८	७	–	–	–	–	४८	१८	३०	–	–	–	–	–	–	–	–	१०	–	–	–	१०	–	–	–	४८	–	–	–	–	–	–	–	–	३७	८	३	–	–	–
१८.	मूड़ा-लिखनिया	१२	४	–	–	–	–	१२	–	–	१२	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१२	१	–	–	–	–	–	–	१	–	३	९	–	–	–
१९.	राजा का बैठका	२१	४	३	–	–	–	१८	–	२१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२१	–	–	–	–	–	–	–	–	११	६	४	–	–	–
२०.	ललमनिया	७	१	–	–	–	–	७	–	–	७	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	७	–	–	–	–	–	–	–	–	–	७	–	–	–	–
२१.	सहवइया	१५	१	–	–	–	–	१५	–	–	१५	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१५	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१५	–	–	–	–
२२.	सोरहोघाट	१	१	–	–	–	–	१	–	–	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	१	–	–	–	–
२३.	सूगापांख	२	१	१	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	–	–	–	–	–	–	–	–	–	२	–	–	–	–
२४.	हथबनवा	१४	२	४	–	–	–	१०	–	१०	–	–	–	–	–	४	–	–	–	–	३	–	–	३	–	४	१०	–	–	–	–	–	–	–	–	४	–	१०	–	–	–
२५.	हरनाहन्नी	३३	५	३	४	–	३	२३	१	३१	–	१	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	९	२४	–	–	१	१	–	–	–	२	२५	२	६	–	–	–
कुल योग :–		३९७	६०	५२	२२	४	३	३१६	१०७	१५७	५८.	२४	४	३	४	.११	१३	१३	३	२४	३	४	२३	५४	२	३८	२३	३६४	९	४	६	८	८	१	१	३७	१६९	९०	१३८	१	१	३

युवा परिभ्रमण एवं सांस्कृतिक समिति

स्थापित १९७६ ई० (सदस्यता–प्रपत्र) रजिस्टर्ड

नाम– – – –